■ शहीदे आज़म के जन्मदिवस 27 सितम्बर के अवसर पर

भगत सिंह की बात सुनो! नयी क्रान्ति की राह चुनो!!

एक ही रास्ता – साम्राज्यवाद-पूंजीवाद विरोधी क्रान्ति का रास्ता

फांसी चढ़ने से ठीक तीन दिन पहले, फांसी के बजाय एक युद्धबन्दी के रूप में गोली से उड़ा दिये जाने की मांग करते हुए 20 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव ने पंजाब के गवर्नर को जो पत्र भेजा था, उसमें उन्होंने लिखा था, हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है – चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूंजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूंजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि आपकी सरकार कुछ नेताओं या भारतीय समाज के मुखियों पर प्रभाव जमाने में सफल हो जाये, कुछ सुविधाएं मिल जायें, अथवा समझौते हो जायें, इससे भी स्थिति नहीं बदल सकती, तथा जनता पर इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है।..

''हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न-भिन्न दशाओं में भिन्न-भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी विचार के स्तर पर यह युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाए कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाये। चाहे कोई भी परिस्थिति हो इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आपकी इच्छा है कि आप जिस स्थिति को चाहें चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। बहुत सम्भव है कि यह युद्ध भयंकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढांचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रान्ति नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता।

''निकट भविष्य में अन्तिम युद्ध लड़ा जाएगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूंजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप में भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारम्भ ही किया है और न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा।''

स्वातंत्र्योत्तर भारत के आर्थिक-राजनीतिक विकास की दिशा और परिणतियों तथा वर्तमान सर्वग्रासी ढांचागत संकट के हर पहलू के व्यापक और सूक्ष्म अध्ययन के बाद हमारा यह निश्चित मूल्यांकन है कि आने वाली कुछ दशाब्दियों का समय निर्णायक युद्ध की तैयारी सूत्रपात और समापन का कालखण्ड सिद्ध होगा। भारतीय पूंजीवाद ने आज जिस विश्व पूंजीवादी तंत्र के साथ उदारीकरण और मुक्त बाजार के नारे लगाते हुए स्वयं को पूरी तरह जोड़ लिया है, और अपने गतिरोध को दूर करने के लिए जिस साम्राज्यवाद के जूनियर पार्टनर की स्थिति को-खुले रूप में स्वीकार किया है, वह स्वयं मन्दी एवं ठहराव के अन्तकालिक रोग से जूझ रहा है। अस्तित्व के संकट से तात्कालिक मुक्ति के लिए साम्राज्यवादी लूट के लिए पूरे देश को खुला कर देने का जो मार्ग भारतीय पूंजीपति वर्ग ने चुना है, उसकी इसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। कर्ज के मकड़जाले में लातिनी अमेरिकी देशों की तरह उलझकर और सब-सहारा के अफ्रीकी देशों की तरह अकाल और भुखमरी के काले साये के नीचे जीते हुए मुल्क का अवाम यूं ही हाथ पर हाथ धरे बैठा नहीं रहेगा। बड़े पैमाने पर छंटनी, बेरोजगारी, आसमान छूती मंहगाई, भुखमरी, बेहद मंहगी शिक्षा व स्वास्थ्य-सुविधाएं और धनी-गरीब के बीच तेजी से बढ़ती खाई – नई आर्थिक नीति के ये नतीजे कुछ वर्षों के भीतर ही देशव्यापी व्यवस्था - विरोधी क्रान्तिकारी जनउभारों को जन्म देंगे। और कोई भी रास्ता नहीं है। दूसरा कोई भी विकल्प नहीं हैं। इससे भिन्न कोई भविष्य नहीं है।

यह युद्ध जो छिड़ने वाला है, कई दशकों तक जारी रह सकता है पर यही वह निर्णायक युद्ध होगा जिसकी भगतसिंह ने भविष्यवाणी की थी। यह साम्राज्यवाद-पूंजीवाद विरोधी क्रान्ति होगी। अब यही एकमात्र रास्ता शेष बचा है। इस रास्ते पर चल पड़ने में हमारा समाज जितना विलम्ब करेगा, इसका जीवन उतना ही दमघोंटू , दुःसह दुखदायी और तिल-तिल करके मारने वाला होता जाएगा।

ऐसी स्थिति में छात्रों-नौजवानों पर यह फौरी जिम्मेदारी आ पड़ी है कि वे स्वयं संगठित हों, जैसा कि भगतसिंह ने कहा था, "औद्योगिक क्षेत्रों की गन्दी बस्तियों और गांव के टूटे-फूटे झोपड़ों में रहने वाले करोड़ों लोगों का" जगायें, मेहनतकश जनता के क्रान्तिकारी संगठन बनायें और अपनी लड़ाई को उनकी लड़ाई से जोड़ें तथा भारतीय क्रान्ति के एक सही नये नेतृत्वकारी केन्द्र के निर्माण के लिए नये सिरे से प्रयास संगठित करें।

छात्रों – नौजवानों के लिए , प्रारम्भिक प्रयास के रूप में शुरूआत करने के लिए विचारार्थ हम कुछ सुझाव प्रस्तुत करते हैं:

1. भारतीय क्रान्ति, जो निश्चित तौर पर अतीत में दुनिया के अन्य देशों में हुई समाजवादी क्रान्तियों का ही एक नया परिष्कृत संस्करण

होगा; उसकी तैयारी के लिए – एक नये क्रान्तिकारी पुनर्जागरण और प्रबोधन के लिए नौजवानों को व्यापक सांस्कृतिक आन्दोलन का सूत्रपात करना होगा, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, पुनरूत्थान की सभी शक्तियों, पुरातन मूल्यों-मान्यताओं-संस्थाओं के विरूद्ध प्रचार करना होगा, उन्हें चुनौती देनी होगी और आमने-सामने की लड़ाई की तैयारी करनी होगी। कलम के सच्चे सिपाहियों की नई पीढ़ी को लेखनी और तलवार दोनों लेकर (पुनर्जागरण काल के महामानवों की भाँति) मैदान में उतरना होगा, अपनी मान्यताओं को जीवन में उतारना होगा तथा ढोंगी और नकली प्रगतिशीलों का पर्दाफाश करना होगा। दर्शनविचारधारा के क्षेत्र में, पूरे बौद्धिक मोर्चे पर युवा पीढ़ी को नये वैचारिक संघर्ष का सूत्रपात करना होगा।

2. छात्रों-नौजवानों को शहरों के आम लोगों के मुहल्लों और गांवों में नौजवानों के क्रान्तिकारी संगठन बनाने होंगे और भगतसिंह और उनके साथियों द्वारा स्थापित नौजवान भारत सभा की परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा। इसी प्रकार, स्कूलों-कालेजों-विश्वविद्यालयों में भी क्रान्तिकारी परम्परा का अनुसरण करते हुए, पेशेवर धन्धेबाज, चुनावी पूंजीवादी पार्टियों के पिछलग्गू छात्र संगठनों से अलग शिक्षा व्यवस्था और समाज व्यवस्था में आमूलचूल बदलाव के सामान्य कार्यक्रम के आधार पर नये क्रान्तिकारी छात्र संगठन खड़े करने के प्रयास करने होंगे।

3.छात्रों और नौजवानों के संगठनों में सक्रियता के अतिरिक्त समय निकालकर नौजवान कार्यकर्ताओं को गावों और शहरों के मेहनतकशों के बीच भी जाना होगा, उनसे सीखना होगा, हर माध्यम से उनके बीच क्रान्तिकारी प्रचार कार्य करना होगा, जहां तक सम्भव हो सके, उनके संघर्षों में मदद एवं भागीदारी करनी होगी तथा उन्हें संगठित करने की कोशिश करनी होगी।

4. जैसा कि भगत सिंह ने **"नवयुवक राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम"** पत्र नामक अपने आखिरी महत्वपूर्ण दस्तावेज में क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा प्रस्तुत करते हुए लिखा था, छात्रों-नौजवानों को आम मेहनतकश जनता के जीवन और संघर्षों के साथ अपने को एकरूप करते हुए भारतीय क्रान्ति को नेतृत्व देने वाली एक सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी के निर्माण एवं गठन के बारे में भी सोचना और प्रयास करना होगा।

(क) जो सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी होगी, वैज्ञानिक समाजवाद जिसकी विचारधारा होगी और सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति जिसका लक्ष्य होगा; (ख) जो जनता के सभी वर्गों और समुदायों के जनसंगठनों का राजनीतिक मार्गदर्शन करेगी और उनके संघर्षों का नेतृत्व करेगी; (ग) पूर्णकालिक क्रान्तिकारी या पेशेवर कार्यकर्ता जिस पार्टी के मेरुदण्ड होंगे, जो भूमिगत होगी तथा सशस्त्र संघर्ष के लिए और राज्यसत्ता पर कब्जा जमाने के लिए तैयार होगी। भगत सिंह ने ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी के निर्माण के बारे में जो भी उपरोक्त दस्तावेज में लिखा था, वह आज भी प्रासंगिक है। नौजवानों को उनके इन सुझावों पर सोचना ही होगा।

हम यहां पर क्रान्तिकारी कार्यक्रम का कोई मसविदा नहीं प्रस्तुत कर रहे हैं!

जो नौजवान शहीदे आज़म भगत सिंह के आदर्शों और विचारों को न केवल प्यार करतें हैं; न केवल उनका अध्ययन करते हैं, बल्कि उन्हें जीवन में उतारने और क्रान्ति का सिपाही बनने के बारे में भी सोचते हैं, उनके लिए विचारार्थ कुछ मुद्दे और एक व्यापक दिशा प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि आप एक ईमानदार, स्वाभिमानी, बहादुर, परिवर्तनकामी नौजवान हैं तो हम, 'आह्वान' की पूरी टीम, आपके सहयोद्धा हैं। हम उन नौजवानों के साथ मिल-बैठकर भगत सिंह के चिन्तन के आलोक में भारतीय क्रान्ति के रास्ते के बारे में सोचना-विचारना चाहते हैं और इस रास्ते पर चलना चाहते हैं।

इस उद्देश्य से सहमत तमाम युवा सहयात्रियों का हम आह्वान करते हैं। बातचीत के लिए, सोच – विचार के लिए तथा साथ – साथ एक नयी दिशा में आगे बढ़ने के लिए हम उन सभी नौजवानों को आमंत्रित करते हैं जो वास्तव में नौजवान हैं!

● सम्पादक मण्डल

जन्मदिवस 31 जुलाई के अवसर पर

जब तक सम्पत्ति मानव-समाज के संगठन का आधार है, संसार में अन्तर्राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता। राष्ट्रों-राष्ट्रों की, भाई-भाई की, स्त्री-पुरुष की लड़ाई का कारण यही संपत्ति है। संसार में जितना अन्याय और अनाचार है, जितना द्वेष और मालिन्य है, जितनी मूर्खता और अज्ञानता है, उसका मूल रहस्य यही विष की गांठ है। जब तक सम्पत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार रहेगा, तब तक मानव-समाज का उद्धार नहीं हो सकता। मजदूरों के काम का समय घटाइये, बेकारों का गुजारा दीजिये, जमींदारों और पूंजीपतियों के अधिकारों को घटाइये, मजूरों और किसानों के स्वप्नों को बढ़ाइये, सिक्के का मूल्य घटाइए इस तरह के चाहे जितने सुधार आप करें, लेकिन यह जीर्ण दीवार इस टीप-टाप से नहीं खड़ी रह सकती। इसे नये सिरे से गिराकर उठाना होगा। ...

... सम्पत्ति ने मनुष्य को अपना क्रीतदास बना लिया है। उसकी सारी मानसिक, आत्मिक और दैहिक शक्ति केवल सम्पत्ति के संचय में बीत जाती है। मरते दम भी हमें यही हसरत रहती है कि हाय इस सम्पत्ति का क्या हाल होगा। हम सम्पत्ति के लिए जीते हैं, उसी के लिए मरते हैं। हम विद्वान् बनते हैं सम्पत्ति के लिए, गेरुए वस्त्र धारण करते हैं, सम्पत्ति के लिए। घी में आलू मिलाकर हम क्यों बेचते हैं? दूध में पानी क्यों मिलाते हैं? भांति-भांति के वैज्ञानिक हिंसा यंत्र क्यों बनाते हैं? ...

...इसका एक मात्र कारण सम्पत्ति है। जब तक सम्पत्तिहीन समाज का संगठन न होगा, जब तक संपत्ति-व्यक्तिवाद का अन्त न होगा, संसार को शान्ति न मिलेगी।

●प्रेमचन्द